IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोधशीर्षक- बदलते सामाजिक परिदृश्य में सिनेमा के नारी पात्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

रविकांत जाटव

शोधार्थी (हिंदी साहित्य)

जीवाजी विश्विद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

शोध सार- आज का हिंदी सिनेमा तमाम तरह की बनी बनायी धारणाओं और पारंपरिक ढांचों और मिथकों को तोड़ता है। यह अपने समय की नब्ज को न सिर्फ़ पकड़ता है बल्कि समाज के बदलाव, अनुकूलताओ, और प्रतिकूलताओ को सिनेमा के माध्यम से उनको परिलक्षित करता है। आज सिनेमा अपने तेवर और कलेवर, कथ्य और कथानक सभी स्तरों पर तेजी से बदल रहा है। भारतीय दर्शकों की दिन- प्रतिदिन रुचि बदल रही है। पुरातनता से नवीनता की ओर स्त्री सशक्तीकरण के विभिन्न आयाम और सरोकारों को अभिनेत्रियां विभिन्न प्रारूपों में उतर कर उनके सामाजिक मानदंडों को प्रस्तुत कर रही हैं। हिंदी सिनेमा ने नारी सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सिनेमा के हर पक्ष में स्त्री अपनी वर्चस्वता को स्थापित करने में लगी है। हिंदी सिनेमा में नायिकाओं की भूमिका जनवादी चेतना पर आधारित होती है। जिसमें ***संघर्ष, अस्पृश्यता, वर्गभेद, वर्णभेद, घरेलू हिंसा साहूकारी प्रथा, तथा यौन शोषण*** को दर्शाया है।

मुख्य बिंदु- **संघर्ष**

अस्पृश्यता

वर्गभेद

वर्णभेद

घरेलू हिंसा

साहूकारी प्रथा

यौन शोषण

धारणाएं

मिथक

पुरातनता

नवीनता

सशक्तिकरण

वर्चस्वता

समानता

शोध प्रपत्र- भारतीय हिंदी सिनेमा का सफर अवाक, सवाक, ब्लैक एंड व्हाइट कलर जैसे विभिन्न पायदानों से होता हुआ आज डिजिटल युग तक आ पहुंचा है, जिसमें महिलाओं का प्रतिनिधित्व अधिक बढ़ा है तथा महिलाओं ने अपने प्रभुत्व एवं वर्चस्व के द्वारा कई रूढ़िवादी परंपराओं को नष्ट किया जो समाज के लिए एक दिशा बोधक एवं समाज बोधक बनी ।

महिलाओं ने हिंदी सिनेमा में ऐसे बहुत से कृत्य किए, जिससे समाज में संवेदनशीलता, मौलिक अधिकार एवं वैश्वीकरण का विस्तारीकरण हुआ। महिलाएं हिंदी फिल्मों में अपनी योग्यता, दक्षता और प्रभुता के द्वारा समाज एवं राष्ट्र को बदलना चाहती हैं परंतु साहित्य और समाज का दृष्टव्य महिलाओं के लिए अलग-अलग है। स्त्री छवि समाज में बदलती रही है उसका कारण समाज की कुंठाओं और रूढ़ियों ने उसे घर की दहलीज के अंदर बांध के रखा है परंतु हिंदी फिल्म उद्योग ने महिलाओं को जागरूक किया जिससे वे स्वयं निर्णय ले सकें। ***विजय शर्मा के अनुसार-*** " अधिकांश हिंदी फिल्में पुरुष प्रधान होती हैं। नायक के कंधे पर चलती हैं। फिल्म की सफलता का पूरा श्रेय नायक को जाता है। नायिका की भूमिका नायक का दिल बहलाने मात्र की होती है। बहन बेटी है, तो अगला होती है। और नहीं, तो पेड़ों के इर्द-गिर्द हीरो के संग नाचने वाली सुकुमारी नायिका। कभी-कभी वह कोठे पर नाच-गाकर पेशा करने वाली बना दी जाती है। निर्देशक जब चाहता है, वह प्रकट हो जाती है, जब वह जहां चाहता है अदृश्य हो जाती है। उसका कोई व्यक्तित्व नहीं होता, स्वतंत्र अस्तित्व या छवि नहीं होती।" 1 फिल्म में स्त्री का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता यह बात सही है। बहुत सी फिल्मों में उसका कथानक फिल्म के आसपास घूमता है, जो इस फिल्म का मुख्य आधार बन जाता है। नायिकाओं के माध्यम से भौतिक, रोमानियत एवं सृजनात्मक को व्यक्त किया जाता है। जिसमें विश्वसनीयता और चित्रात्मकता होती है प्रत्येक हिंदी फिल्म की नायिका जनसंदेशआत्मक होती है। हिंदी सिनेमा में नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुरुष और महिलाओं की सामाजिक स्थिति को विभेदित करने के लिए भरपूर प्रयास सिनेमा में किया गया। सन् 1913 में दादा साहेब फाल्के **'राजा हरिश्चंद्र'** बना रहे थे, तो उन्हें तारामती की भूमिका के लिए कोई महिला नहीं मिली थी किंतु आज बदलते परिदृश्य में महिला प्रधान बनकर फिल्में बन रही हैं तथा फिल्म के विभिन्न पक्षों में अपने जीवन को सारगर्भित एवं महत्वकांक्षओं की पूर्ति कर फिल्म उद्योग में एक निर्णायक भूमिका निभाकर सामाजिक प्रारूपता को तैयार कर रही हैं।

दादा साहेब फाल्के, भारतीय हिंदी सिनेमा के पितामह कहे जाते हैं, उन्होंने अपने विचार एवं सोच के माध्यम से महिलाओं को किसी भी प्रकार से राजी करके उन्हें अभिनय के लिए मानसिक रूप से तैयार किया और कमलाबाई गोखले पहली महिला थी जिन्होंने सिनेमा में अपनी कला दक्षता (अभिनय) को दिखाया। " फिल्म **'भस्मासुर मोहिनी'** में काम करने के लिए ***कमलाबाई गोखले*** राजी हो गई। मराठी नाटकों में काम करने वाली कमलाबाई ने तमाम विरोधों और अवरोधों के बावजूद फिल्मों में काम किया। उन्हें देखकर दूसरी महिलाओं ने भी हिम्मत जुटाई। फिर क्या था धीरे-धीरे सभी वर्गों की महिलाएं नायिका बनने लगी। आज फिल्मी नायिकाओं का समाज में एक खास 'रुतबा' है।" 2 हिंदी फिल्में दो प्रकार की होती हैं। सामांतर और व्यावसायिक । दोनों प्रकार की फिल्मों में नायिकाओं की विशिष्ट भूमिका है अर्थात नायिकाएं अपनी जीवंतता, योग्यता, सौंदर्यता द्वारा अपने मनोभावों को व्यक्त करती हैं। जिससे उनमें समाज के प्रति दायित्व बनता और लोकप्रियता अर्जित होती है। प्रत्येक नायिका समाज के लिए प्रेरणास्रोत है और उसकी कला और उसकी उत्कृष्टता भी शिक्षाप्रद एवं उद्देश्य होती है। बदलती सामाजिक व्यवस्था और सिनेमा के नारी पात्र रुपहले पर्दे पर नारी की यात्रा को बिभिन्न हिंदी सिनेमा के माध्यम से उनको व्यक्त किया जा रहा है। जिसमें ***'मदर इंडिया' (नरगिस) , 'आंधी' (सुचित्रा सेन), 'बैंडिट क्वीन' (सीमा विश्वास)*** इन सभी फिल्मों की नायिकाओं ने समाज का यथार्थ और वास्तविकता को चित्रित किया है।

- **'मदर इंडिया'** - भारतीय कृषक जीवन का दृश्य महाकाव्य कही जाने वाली ***'मेहबूब खान'*** की कालजयी फिल्म **'मदर इंडिया'** (1957) इस वाक्य को पूर्ण चरितार्थ करती है। " फिल्म के केंद्र में मूलत: साहूकारी प्रथा उससे उपजे कृषक जीवन के संत्रास हैं, जिसकी कहानी गांव की राधा (नर्गिस) नामक स्त्री के आस-पास बुनी गई है, जिसका पति अपाहिज होकर सदा- सदा के लिए घर छोड़ कर गया है।" 3 इसमें औरत की संघर्ष गाथा तथा मां और बेटे की मार्मिक कथा भी है। राधा (नर्गिस) ने एक आदर्श नारी और भावुक मां के रूप में बड़ा सुंदर अपने चरित्र को अवलोकनार्थ किया है। नर्गिस ने एक इंटरव्यू में कहा था- " मुझे इस फिल्म में काम करने पर आत्मसंतुष्टि सी मिली। जब मैंने यह चरित्र निभाया तब मैं सिर्फ 25 साल की थी। इस रोल का विस्तार युवा दुल्हन से लेकर उम्रदराज महिला तक का था। यह एक बड़ी चुनौती थी, सभी ने मुझे यह रोल करने के लिए मना किया अगर तुमने कैरियर और युवावस्था के शिखर पर यह रोल किया तो दर्शक तुम्हें नायिका के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। मैंने किसी की परवाह नहीं की, क्योंकि मुझे इस रोल से प्यार हो गया था।" 4 राधा (नर्गिस) **'मदर इंडिया'** की आदर्श नायिका है जो संस्कारवान, ममतामयी,त्यागमयी के रूप में उसका चरित्र एक विशिष्ट और गरिमा युक्त है। राधा एक आदर्श पत्नी और मां है जो बिरजू के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती है और हर संघर्ष में उसके साथ बराबरी से खड़ी रहती है राधा ने कभी जीवन में हार नहीं मानी संघर्ष ही उसके जीवन का मुख्य लक्ष्य है। राधा बड़ी संघर्षपूर्ण परिस्थितियों से जूझती है। अपने बच्चों का पालन पोषण करती है। उसके दो बेटे हैं रामू और बिरजू । रामू शालीन, सभ्य और सुशील है जबकि बिरजू असभ्य, अस्यमी और हिंसक है। दोनों भाइयों के विचार अलग-अलग हैं। सुखीलाला का अत्याचार अमानवीय और अप्राकृतिक है , जिसमें दया के भाव नहीं है। बिरजू का व्यवहार भी लाला की बेटी के लिए चश्खल है। राधा का संघर्ष व्यक्तिगत नहीं है, गांव की अस्मिता का संघर्ष है। वह गांव वालों को रोकती है, जब वे प्राकृतिक आपदाओं से घबराकर गांव छोड़कर जाते हैं, अपने बेटे का बलिदान करती है। गांव की बेटी के सम्मान की रक्षा के लिए जबकि उसका पिता ही राधा के कष्टों का सबसे बड़ा कारण है। राधा का चरित्र स्वार्थहीन एवं उच्च कोटि का है। गांव की सभी बेटियों को अपनी बेटी मानती है तथा बेटी के स्थान पर अपने बेटे को गोली मार देती है परंतु उसका आवेश, यथार्थ, लोमहर्षकता एक क्षणिक पुत्र के प्रति उसके भाव बदल जाते हैं। जो उसके ममत्व, वात्सल्य को दर्शाया है। राधा का चरित्र अतुलनीय है। किस्मत, कुदरत, गरीबी और जुल्म से लड़ती है क्योंकि विजय सत्य की होती है।

- **आँधी** - सत्तर के दशक में नायिका प्रमुख फिल्म **'आँधी'** का अपना विशेष महत्व था, यह फिल्म सन 1975 में निर्देशक ***गुलजार*** द्वारा निर्देशित की गई थी, जिसमें ***सुचित्रा सेन*** ने आरती देवी का किरदार निभाया था। और ***संजीव कुमार*** जेके बने थे। यह फिल्म भारतीय राजनीति की महारथी **'इंदिरा गांधी'** की जीवन शैली पर आधारित थी, जो ***कमलेश्वर*** के उपन्यास **'आंधी'** से प्रेरित है। इस फिल्म के प्रदर्शन के द्वारा इंदिरा गांधी भी काफी प्रभावित हुई। " नशे में धुत आरती देवी होटल के काउंटर पर आकर रहने के लिए कमरा मांगती है। होटल का मैनेजर जेके उसे पहचान जाता है कि वह मेयर की बेटी है। व्यक्तिगत रूप से उसकी मदद करता है। बाद में वह जेके को बताती है कि वह शराब नहीं पीती,किसी ने उसे धोखे से पिला दी थी।"5 जेके के साथ ,आरती की कई मुलाकाते होती है जो बाद में प्यार में बदल जाती हैं। आरती पिता के विरोध के बाद भी जेके से शादी कर लेती है। उसके जीवन में परिवार और राजनीतिक महत्वाकांक्षा का द्वंद बढ़ जाता है परंतु जेके उसकी राजनीतिक गतिविधियों को रोकना चाहता है। आरती घर संभाले और एक आदर्श ग्रहणी के रूप में अच्छा जीवन व्यतीत करें। परंतु आरती इसका विरोध करती है क्योंकि राजनीति उसके संस्कार एवं संस्कृति में बसी हुई है, जो उसके जीवन का नियामक है। जेके और आरती

के बीच तनाव बढ़ जाता है। आरती घर छोड़ने का फैसला करती है। नो साल के पश्चात आरती चुनाव प्रचार के लिए उसी नगर में आती है जहां उसका पति जेके होटल में मैनेजर है उसी वक्त दोनों का आमना-सामना हो जाता है और वे दोनों टूटी हुई शादी में फिर से प्यार तलाशने लगते हैं। विपक्षी नेता जेके और आरती के खिलाफ तस्वीरें खींचकर 'स्कैंडल' का रूप बना देते हैं, जिससे जगह-जगह आरती देवी के खिलाफ माहौल खराब हो जाता है । उसके नाम के पुतले जलाए जाते हैं तथा उसका चरित्रक पतन हो जाता है। जेके उसका पति है परंतु समाज उसे उपेक्षित दृष्टि से देखता है अर्थात आरती देवी अपनी ज़िद्द, यथार्थ ,नई चेतना और संभावनाओं को प्राप्त करना चाहती है। जेके आरती से कहता है- " अगर तुम चुनाव हार जाओ तो घर मत लौट जाना, तुम्हारी हार मेरी जीत नहीं हो सकती। मैं तुम्हें सफल देखना चाहता हूं। आरती चुनाव जीत जाती है जेके के पैर छूकर उससे विदा होती है, उनके पुनर्मिलन की संभावनाओं के साथ फिल्म खत्म हो जाती हैं।" 6 हिंदी सिनेमा की फिल्म **'आंधी'** राजनीतिक जिजीविषाओं एवं सब्जबाग पर आधारित नहीं है बल्कि समाज की पुरुष प्रधान सोच को गहराई से रेखांकित करती है। जीवन में औरतों को कदम-कदम पर समझौते करने पड़ते हैं। हर रिश्ते में पुरुष ही अपनी बात मनवाना चाहता है। आरती दक्ष, योग और महत्वकांक्षी है। राजनीति में अपना एक स्थान बनाती है। उसने अपने पिता की मर्जी के खिलाफ शादी की थी, उसे प्रोत्साहित करने की बजाय, उसे मजबूर किया कि वह परिवार या जीवनशैली को चुने परंतु असमंजस्य की स्थिति में फंस जाती है। पूरे नो साल के पश्चात उस स्तर पर पहुंचने में उसे कई संघर्ष करने पड़ते हैं। पिता और पति दोनों ही नाराज हो जाते हैं। परंतु जीवन के मूल्यों को समझती है, उनका सम्मान करती है। अंत मे अपने पति जेके के पैरों को स्पर्श करती है और अदृश्य (चली) हो जाती है। इस फ़िल्म का मुख्य उद्देश संघर्ष करके महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करना और उन्हें व्यवहारिक रूप देकर जीवन के यथार्थ से जोड़ना, यही जीवन की 'आंधी' है परंतु सत्य और संघर्ष की विजय होती है।

- **बैंडिट क्वीन**- भारतीय हिंदी फिल्म में ***'बैंडिट क्वीन'*** *का* संबंध फूलन देवी के निजी जीवन से है, जिसमें ***'सीमा विश्वास'*** ने फूलन देवी का किरदार निभाया है। जिसे सन 1995 में निर्देशक शेखर कपूर ने निर्देशित किया था। यह फ़िल्म महिला डकैत फूलन देवी के जीवन पर बनाई गई थी। जिसका संबंध बेहमई सामूहिक बालात्कार कांड से है। ***'बैंडिट क्वीन'*** की फूलन को दस्यु सुंदरी के नाम से भी जाना जाता है। एक समय फूलन की गतिविधियां इतनी बढ़ गई थी कि उसे आत्मसमर्पण के लिए बाध्य होना पड़ा। ग्वालियर की केंद्रीय जेल में फूलन देवी ने राजनीति से जुड़ने के पूर्व समय गुजारा। "1994 में सुप्रीम कोर्ट ने उसे आजाद कर दिया। जनहित में उस पर लगे सभी मामले हटा लिए गए। इसके बाद फूलन उत्तर प्रदेश से समाजवादी पार्टी के टिकट पर सांसद चुनी गई। जीते- जी किवदंती बन चुकी फूलन के जीवन पर ***'माला सैन'*** ने एक किताब लिखी उसी किताब को आधार बनाकर ***शेखर कपूर*** ने बैंडिट क्वीन नामक फिल्म बनाई थी।" 7 ***'बैंडिट क्वीन'*** की फूलन देवी गरीब, अशिक्षित, असहाय और वंचित वर्ग से संबंधित है। फूलन का गुनाह था, गरीब होना, निम्न जाति में पैदा होना, और औरत होना । इन तीनों वजहों से उस पर जुल्म होते रहे। वक्त के साथ यह जुल्म बढ़ते गए। गरीब और निम्न जाति का होने पर भी फूलन में विरोध करने की क्षमता भरपूर थी। " सवर्ण हमें भोग्य समझते हैं। दलित पुरुष भी मात्र संपत्ति के रूप में देखते हैं। ऐसे में हम प्रेम करें तो किससे ? बेहत्तर मानवता की उम्मीद में अपना प्रेम स्थगित करती है।" 8 फूलन के कारनामे न्याय व्यवस्था की नजरों में अपराध है। परंतु उसके द्वारा भोगे गए उत्पीड़न और अन्याय को देखा जाए तो वह तर्कसंगत है। उसके पास हथियार उठाने के उठाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। अत्याचार जब अपनी सीमा पार कर जाता है तो इंसान भी अपनी हदें पार करने के लिए मजबूर हो जाता है। फूलन देवी ने समाज में अत्याचार को रोकने के लिए अपनी इच्छाओं को

अनुकूलित कर के अत्याचारों को रोकने का प्रयास किया। उसने अपने जीवन में यथार्थता, अश्लीलता, अभद्रता को स्वयं भोगा। फूलन देवी निम्न जाति की नाबालिग लड़की थी। स्कूल जाने की उम्र में उसका विवाह अपने से तीन गुने उम्र के पुरुष के साथ कर दिया जाता है। जिसे वेमेल या कुमेल विवाह के नाम से भी जाना जाता है। अधिक उम्र का पति कम उम्र की पत्नी के साथ सहवास करता है तो वह बालात्कार का ही रूप है। पति के यौनाचार कृत्य से घबराकर फूलन घर से भाग जाती है और जीवन की मुसीबतों से भरा सिलसिला शुरू हो जाता है। उसके पश्चात सामूहिक बलात्कार, बेहमई के उच्च वर्ग द्वारा तीन रात लगातार बलात्कार करना, नग्न अवस्था में कुएं से पानी लाना तथा धीरे-धीरे इन्हीं सब विषमताओं के कारण फूलन डाकुओं के गिरोह में शामिल हो जाती है। और उत्तर भारत की चंबल घाटी की प्रसिद्ध महिला डकैत बन जाती है। समाज की जो सच्चाइयां हम पर्दे पर नहीं देख सकते, उन्हें समाज में होते देखकर विरोधी क्यों नहीं करते? क्या जब फूलन को नंगा कर कुएं से पानी लाने के लिए मजबूर किया जा रहा था। या जब 72 घण्टे तक उसके साथ बालात्कार हुआ तब क्या कानून व्यवस्था सँभालने वाले नपुंसक हो गए थे ? औरतों को ही क्यों नैतिकता के पाठ पढाए जाते है। पुरुषों को उनकी हवस को काबू में रखने की बात क्यों नही सिखायी जाती है।"9 'बैंडिट क्वीन' की फूलन देवी भारतीय समाज के लिए एक चुनौती है। जिसने महिला होकर अमानवता, नग्नता, तथा दुराचारी कृत्यों से परिचय कराया। आजकल की सभी महिलाओं को उनसे सीख लेने चाहिए। जिससे महिलाओं में सशक्त विचार धारा पनपे और गलत कृत्यों का विरोध कर सकें। 'सीमा विश्वास' ने समाज के यथार्थ से परिचय कराया 'बेंडिट क्वीन ' बनकर। उन्होंने फ़िल्मी पर्दे पर लाचारी, शोषण, उत्पीड़न, पुरूष का पुरूषतत्वहीन होना, बड़े वीरत्व, साहसत्व, एवं नारीत्व के साथ उनको व्यक्त किया है। इस फ़िल्म ने पूरे भारतवर्ष की नारियों में आत्मविश्वास जगाया तथा गलत कृत्यों का विरोध करने का साहस उत्पन्न किया।

संदर्भ ग्रंथसूची - 1. उद्धत संपा, मृत्युंजय, सिनेमा के सौ वर्ष, पृष्ठ,227

2. खान शमीम, सिनेमा में नारी, ग्रंथ अकादमी, संस्करण:2017,पृष्ठ,15,16

3. गौतम एस एस, हिंदी सिनेमा और दलित, गौतम बुक, पृष्ठ,19

4. खान शमीम, सिनेमा में नारी, ग्रंथ अकादमी, संस्करण:2017,पृष्ठ, 47

5. वही, पृष्ठ, 78

6. वही, पृष्ठ, 79

7. वही , पृष्ठ, 116

8. गौतम एस एस, हिंदी सिनेमा और दलित, गौतम बुक, पृष्ठ,42

9.खान शमीम, सिनेमा में नारी, ग्रंथ अकादमी, संस्करण:2017,पृष्ठ,117